==

AVYAKT MURLI

12 / 01 / 77

==

12-01-77 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

‘बालक सो मालिक’ बननेवालों के तीनों कालों का साक्षात्कार

त्रिकालदर्शी शिवबाबा हर आत्मा के तीनों कालों को देखते हुए बोले:-

आज बाप-दादा हर बच्चे के तीनों कालों को देख रहे हैं। पास्ट (Past;भूतकाल) में आदि काल के भक्त हैं या मध्यकाल के? क्या भक्ति काल समाप्त हो गया है? भक्ति का फल - ज्ञान सागर और ज्ञान की प्राप्ति प्राप्त करते हुए ज्ञानी तू आत्मा बने हैं, या बन रहे हैं? भक्ति के संस्कार अधीनता अर्थात् किसी के अधीन रहना, मांगना, पुकारना, स्वयं को सदा सम्पन्नता से दूर समझना, इस प्रकार के संस्कार अभी तक अंश मात्र में रहे हुए हैं, या वंश रूप में भी हैं? वर्तमान समय बाप समान गुण, कर्त्तव्य और सेवा में कहाँ तक सम्पन्न बने हैं? वर्तमान के आधार से भविष्य प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ बना रहे हैं? ऐसे हरेक के तीनों कालों को देखते हुए, ‘बालक सो मालिक’ बननेवालों को देखते हुए गुण भी गाते हैं, लेकिन साथ-साथ कहीं-कहीं आश्चर्य भी लगता है। अपने आप से पूछो और अपने आपको देखो कि अभी तक भक्तपन के संस्कार अंश रूप में भी रह तो नहीं गए हैं? अगर अंश मात्र भी किसी स्वभाव, संस्कार के अधीन हैं, नाम,

मान, शान के मंगता (मांगने वाले) हैं; 'क्या' और 'कैसे' के क्वेश्चन (Question) में चिल्लाने वाले, पुकारने वाले भक्त समान 'अन्दर एक बाहर दूसरा', ऐसे धोखा देने के बगुले भक्त के संस्कार हैं, तो जहाँ भक्ति का अंश है वहाँ ज्ञानी तू आत्मा हो नहीं सकती, क्योंकि 'भक्ति है रात और ज्ञान है दिन'। रात और दिन इकट्ठे नहीं हो सकते।

ज्ञानी तू आत्मा, सदा भक्ति के फल-स्वरूप, ज्ञान सागर और ज्ञान में समाया हुआ रहता है, इच्छा मात्रम् अविद्या, सर्व प्राप्ति स्वरूप होता है। ऐसे ज्ञानी तू आत्मा का चित्र अपनी बुद्धि द्वारा खींच सकते हो? जैसे आपके भविष्य श्री कृष्ण के चित्र को जन्म से ही ताजधारी दिखाते हैं, मुख में गोल्डन स्पून (Golden Spoon In Mouth) अर्थात् जन्मते ही सर्व प्राप्ति स्वरूप दिखाते हैं। हेल्थ (Health), वेल्थ (Wealth), हैपीनेस (Happiness) सबमें सम्पन्न स्वरूप हैं। प्रकृति भी दासी है। यह सब बातें, जो भविष्य में प्राप्त होने वाली हैं, उसका अनुभव अब संगमयुग में भी होना है, या सिर्फ भविष्य का ही गायन है? संस्कार यहाँ से ले जाने हैं या वहाँ बनने हैं? त्रिकालदर्शी की स्टेज अभी है या भविष्य में? सम्मुख बाप और वर्से की प्राप्ति अभी है अथवा भविष्य में? श्रेष्ठ स्टेज अब है या भविष्य में? अभी श्रेष्ठ है ना।

संगमयुग के ही अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज का चित्र भविष्य चित्र में दिखाते हैं। भविष्य के साथ पहले सर्व प्राप्ति का अनुभव संगमयुगी ब्राह्मणों का है। अन्तिम स्टेज पर ताज, तख्त, तिलकधारी, सर्व अधिकारी मूर्त बनते हो,

मायाजीत, प्रकृतिजीत बनत□हो। सदा साक्षीपन क□ तख्त नशीन, बाप-दादा क□ दिल तख्त-नशीन, विश्व-कल्याणकारी क□ जिम्मवारी का ताजधारी, आत्म-स्वरूप की स्मृति क□ तिलकधारी, बाप द्वारा मिली हुई अलौकिक सम्पत्ति - ज्ञान, गुण और शक्तियाँ इस सम्पत्ति में सम्पन्न होत□हो। सिंगल ताज (Single Crown) भी नहीं, डबल ताजधारी (DOUBLE Crown) होत□ हो। जैस□डबल तख्त - दिल तख्त और साक्षीपन की स्टाज का तख्त का तख्त है, वैस□जिम्मवारी अर्थात् सवा का ताज और साथ-साथ सम्पूर्ण प्योरिटी (Purity) लाईट (Light) का क्राउन (Crown) भी होता है। तो डबल ताज, डबल तख्त और सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप गोल्डन स्पून (Golden Spoon;सोन□तुल्य) तो क्या लकिन हीर□तुल्य बन जात□हो। हीर□क□ आग□ तो सोना कुछ भी नहीं। 'जीवन ही हीरा बन जाता है'। ज्ञान क□ गहन□गुणों क□ गहनों स□सज□सजाए बनत□हो। भविष्य का श्रृंगार इस संगमयुगी श्रृंगार क□ आग□कोई बड़ी बात नहीं लगती। वहाँ तो दासियां श्रृंगारती, और यहाँ स्वयं ज्ञान-दाता बाप श्रृंगारता है। वहाँ सोन□वा हीर□क□ झूल□में झूलेंग□यहाँ बाप-दादा की गोदी में झूलत□हो, अतीन्द्रिय सुख क□ झूल□में झूलत□हो। तो श्रष्ठ चित्र कौन-सा हुआ? वर्तमान का या भविष्य का? सदैव अपन□ऐस□ श्रष्ठ चित्र को सामन□रखो। इसको कहा जाता है - 'ज्ञानी तू आत्मा' का चित्र।

तो बाप-दादा सबक□ तीनों कालों को दख रह□हैं कि हरक का प्रैक्टीकल (Practical;व्यवहारिक) चित्र कहाँ तक तैयार हुआ है? सबका चित्र तैयार

हुआ है? जब चित्र तैयार हो जाता है तब दर्शन करने वालों के लिए खोला जाता है। ऐसे चैतन्य चित्र तैयार हो जो समय का पर्दा खुले दर्शन सदैव सम्पूर्ण मूर्ति का किया जाता है, खंडित मूर्ति का दर्शन नहीं होता। किसी भी प्रकार की कमी अर्थात् खंडित मूर्ति। दर्शन कराने योग्य बने हो? स्वयं का सोचते हो या समय का सोचते हो? स्वयं के पीछे समय का परछाई है। स्वयं को भी भूल जाते हो; इसलिए मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने तीनों कालों को जानते हुए स्वयं को सम्पन्न-मूर्त अर्थात् दर्शन मूर्ति बनाओ। समझा?

समय को गिनती नहीं करो। बाप के गुणों व स्वयं के गुणों की गिनती करो। स्मृति दिवस तो मनाते रहते हो, लेकिन अब स्मृति-स्वरूप दिवस मनाओ। इसी स्मृति दिवस का यादगार शान्ति स्तम्भ, पवित्रता स्तम्भ, शक्ति स्तम्भ बनाया है, वैसे ही स्वयं को सब बातों का स्तम्भ बनाओ जो कोई हिला न सके। बाप के स्नेह के सिर्फ गीत नहीं गाओ, लेकिन स्वयं बाप समान अव्यक्त स्थिति स्वरूप बनो, जो सब आपके गीत गाए। गीत भले गाओ - लेकिन जिसके गीत गाते हो वह स्वयं आपके गीत गाए, ऐसे अपने को बनाओ।

इस स्मृति दिवस पर बाप स्नेह का प्रैक्टीकल रूप देखना चाहते हैं। स्नेह की निशानी है - कुर्बानी। जो बाप बच्चों से कुर्बानी चाहते हैं, वह सब जानते भी हो। प्रैक्टीकल स्वरूप स्वयं की कमज़ोरियों की कुर्बानी। इस कुर्बानी के मन से गीत गाओ कि बाप के स्नेह में कुर्बान किया। स्नेह के

पीछ कुर्बान करन में कोई मुश्किल व असम्भव बात भी सम्भव और सहज अनुभव होती है। 'अब का स्मृति दिवस समर्थी दिवस क रूप में मनाओ'। स्मृति स्वरूप समर्थ स्वरूप। समझा? बाप उस दिन विशष दखेंग कि किस-किस न कौन-कौन सी कुर्बानी और किस परसेंट और किस रूप में चढ़ाई है। मजबूरी स या मोहब्बत स नियम प्रमाण नहीं करना। नियम है इसलिए करना है - ऐस मजबूरी स नहीं करना। दिल क स्नह का ही स्वीकार होता है। अगर स्वीकार नहीं हुआ तो बक्कार हुआ। इसलिए सुनाया कि 'बगुला भगत' नहीं बनना स्वयं को धोखा नहीं दना। सत्य बाप क पास सत्य ही स्वीकार होता है। बाकी सब पाप क खात में जमा होता है, न कि बाप क खात में। पाप का खाता समाप्त कर बाप क खात में भरो; कदम में पद्मों की कमाई कर पद्मापति बनो। अच्छा।

ऐस इशार स समझन वाल समय को नहीं लकिन स्वयं की सोचन वाल बाप क स्नह में एक सक्कण्ड क दृढ़ संकल्प में कुर्बानी करन वाल डबल ताज, डबल तख्तनशीन, ज्ञानी तू आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्त।

टीचर्स क साथ:

टीचर्स अर्थात् सवाधारी। सवा में सफलता का मुख्य साधन है - त्याग और तपस्या। दोनों में स अगर एक की भी कमी है तो सवा की सफलता में भी इतन परसट कमी होती है। त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प स भी त्याग,

सरकमस्टेंस (Circumstance;परिस्थिति) के कारण या मर्यादा के कारण मजबूरी से त्याग बाहर से कर भी लेंगे तो संकल्प से त्याग नहीं होगा। त्याग अर्थात् ज्ञान-स्वरूप से संकल्प से भी त्याग, मजबूरी से नहीं। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे- 'तपस्वी'। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं। ऐसे सेवाधारी हो ना? त्याग ही भाग्य है। बिना त्याग के भाग्य नहीं बन सकता। इसको कहा जाता है टीचर। तो नाम और काम दोनों टीचर के हैं। केवल नाम टीचर का नहीं। टीचर अर्थात् पोजीशन नहीं, लेकिन सेवाधारी। टीचर्स अर्थात् सभी को पोजिशन दिलाने वाली, न कि पोजीशन समझ उसमें अपने को नामधारी टीचर समझने वाली। जैसे कहा जाता है देना, देना नहीं लेकिन लेना है - ऐसे ही टीचर अपने पोजिशन का त्याग करती है तो यही भाग्य लेना है। अच्छा।

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- सम्पूर्ण दर्शनीय मूर्त बनने के लिए बाबा ने किस विशेष बात की ओर इशारा किया है?

प्रश्न 2 :- भक्ति के संस्कारों की परख किन बातों के आधार से कर सकते हैं?

प्रश्न 3 :- स्मृति दिवस मनाने के लिए किन बातों पर विशेष अटेन्शन देना आवश्यक है?

प्रश्न 4 :- सेवा की सफलता का मुख्य साधन क्या है?

प्रश्न 5 :- संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज की क्या क्या निशानियाँ हैं?

FILL IN THE BLANKS:-

{ प्रैक्टिकल, तैयार, ताजधारी, स्वरूप, अविद्या, समाया, भविष्य, संगमयुग, त्रिकालदर्शी, प्राप्ति }

1 तो बाप-दादा सबके तीनों कालों को देख रहे हैं कि हरेक का __________ (Practical;व्यवहारिक) चित्र कहाँ तक ______ हुआ है?

2 ज्ञानी तू आत्मा, सदा भक्ति के फल-स्वरूप, ज्ञान सागर और ज्ञान में ________ हुआ रहता है, इच्छा मात्रम् ________, सर्व प्राप्ति स्वरूप होता है।

3 यह सब बातें, जो ________ में प्राप्त होने वाली हैं, उसका अनुभव अब ________ में भी होना है,।

4 _____ की स्टाज अभी है या भविष्य में? सम्मुख बाप और वर्से की _____ अभी है अथवा भविष्य में?

5 जैस आपका भविष्य श्री कृष्ण का चित्र को जन्म स ही _____ दिखात हैं, मुख में गोल्डन स्पून (Golden Spoon In Mouth) अर्थात् जन्मत ही सर्व प्राप्ति _____ दिखात हैं।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित कर-

1 :- हाल्थ (Health), वाल्थ (Wealth), हैपीनाश (Happiness) सबमें सम्पन्न स्वरूप हैं। प्रकृति भी सहयोगी है।

2 :- आज बाप-दादा हर बच्च का तीनों कालों को दाख रह हैं। पास्ट (Past;भूतकाल) में आदि काल का भक्त हैं या मध्यकाल का?

3 :- पाप का खाता समाप्त कर बाप का खात में भरो; कदम में पद्मों की कमाई कर पद्मापति बनो।

4 :- समय को गिनती नहीं करो। बाप का गुणों व स्वयं का अवगुणों की गिनती करो।

5 :- सम्मुख बाप और वर्से की प्राप्ति अभी है अथवा भविष्य में? श्राठ स्टाज अब है या भविष्य में? अभी श्राठ है ना।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- सम्पूर्ण दर्शनीय मूर्त बनन□क□ लिए बाबा न□किस विशष बात की ओर इशारा किया है?

उत्तर 1 :- बाबा न□बताया :-

❶ जब चित्र तैयार हो जाता है तब दर्शन करन□वालों क□ लिए खोला जाता है। ऐस□चैतन्य चित्र तैयार हो जो समय का पर्दा खुल□ दर्शन सदैव सम्पूर्ण मूर्ति का किया जाता है, खंडित मूर्ति का दर्शन नहीं होता। किसी भी प्रकार की कमी अर्थात् खंडित मूर्ति।

❷ दर्शन करान□योग्य बन□हो? स्वयं का सोचत□हो या समय का सोचत□हो? स्वयं क□ पीछ□ समय का परछाई है। स्वयं को भी भूल जात□हो; इसलिए मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपन□तीनों कालों को जानत□हुए स्वयं को सम्पन्न-मूर्त अर्थात् दर्शन मूर्ति बनाओ।

प्रश्न 2 :- भक्ति क□ संस्कारों की परख किन बातों क□ आधार स□कर सकत□ हैं?

उत्तर 2 :- बाबा न□बताया :-

❶ भक्ति का संस्कार अधीनता अर्थात् किसी का अधीन रहना, मांगना, पुकारना, स्वयं को सदा सम्पन्नता स दूर समझना, इस प्रकार का संस्कार अभी तक अंश मात्र में रह हुए हैं, या वंश रूप में भी हैं? वर्तमान समय बाप समान गुण, कर्त्तव्य और सत्ता में कहाँ तक सम्पन्न बन हैं?

❷ वर्तमान का आधार स भविष्य प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ बना रह हैं? ऐस हरेक का तीनों कालों को देखत हुए, 'बालक सो मालिक' बनन वालों को देखत हुए गुण भी गात हैं, लेकिन साथ-साथ कहीं-कहीं आश्चर्य भी लगता है।

❸ अपन आप स पूछो और अपन आपको देखो कि अभी तक भक्तपन का संस्कार अंश रूप में भी रह तो नहीं गए हैं? अगर अंश मात्र भी किसी स्वभाव, संस्कार का अधीन हैं, नाम, मान, शान का मंगता (मांगन वाला) हैं; 'क्या' और 'कैस' का क्वेश्चन (Question) में चिल्लान वाला, पुकारन वाला, भक्त समान 'अन्दर एक बाहर दूसरा', ऐस धोखा देना का बगुल भक्त का संस्कार हैं, तो जहाँ भक्ति का अंश है वहाँ ज्ञानी तू आत्मा हो नहीं सकती, क्योंकि 'भक्ति है रात और ज्ञान है दिन'। रात और दिन इकट्ठ नहीं हो सकत।

प्रश्न 3 :- स्मृति दिवस मनान का लिए किन बातों पर विशेष अटेन्शन देना आवश्यक है?

उत्तर 3 :- बाबा न□समझानी दी कि :-

❶ समय को गिनती नहीं करो। बाप क□ गुणों व स्वयं क□ गुणों की गिनती करो। स्मृति दिवस तो मनात□रहत□हो, लक्□किन अब स्मृति-स्वरूप दिवस मनाओ। इसी स्मृति दिवस का यादगार शान्ति स्तम्भ, पवित्रता स्तम्भ, शक्ति स्तम्भ बनाया है, वैस□ही स्वयं को सब बातों का स्तम्भ बनाओ जो कोई हिला न सक□। बाप क□ स्नह्□ क□ सिर्फ गीत नहीं गाओ, लक्□किन स्वयं बाप समान अव्यक्त स्थिति स्वरूप बनो, जो सब आपक□ गीत गाए। गीत भल□गाओ - लक्□किन जिसक□ गीत गात□हो वह स्वयं आपक□ गीत गाए, ऐस□अपन□को बनाओ।

❷ इस स्मृति दिवस पर बाप स्नह्□ का प्रैक्टीकल रूप द□खना चाहत□ हैं। स्नह्□ की निशानी है - कुर्बानी। जो बाप बच्चों स□कुर्बानी चाहत□हैं, वह सब जानत□भी हो। प्रैक्टीकल स्वरूप स्वयं की कमज़ोरियों की कुर्बानी। इस कुर्बानी क□ मन स□गीत गाओ कि बाप क□ स्नह्□ में कुर्बान किया। स्नह्□ क□ पीछ□ कुर्बान करन□में कोई मुश्किल व असम्भव बात भी सम्भव और सहज अनुभव होती है। 'अब का स्मृति दिवस समर्थी दिवस क□ रूप में मनाओ'। स्मृति स्वरूप समर्थ स्वरूप।

❸ मजबूरी स□या मोहब्बत स□नियम प्रमाण नहीं करना। नियम है इसलिए करना है - ऐस□मजबूरी स□नहीं करना। दिल क□ स्नह्□ का ही स्वीकार होता है। अगर स्वीकार नहीं हुआ तो बक्□कार हुआ। इसलिए सुनाया

कि 'बगुला भगत' नहीं बनना स्वयं को धोखा नहीं दना। सत्य बाप का पास सत्य ही स्वीकार होता है। बाकी सब पाप का खात में जमा होता है, न कि बाप का खात में। पाप का खाता समाप्त कर बाप का खात में भरो; कदम में पद्मों की कमाई कर पद्मापति बनो।

प्रश्न 4 :- सवा की सफलता का मुख्य साधन क्या है?

उत्तर 4 :- बाबा न बताया

❶ सवा में सफलता का मुख्य साधन है - त्याग और तपस्या। दोनों में स अगर एक की भी कमी है तो सवा की सफलता में भी इतन परसट कमी होती है। त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प स भी त्याग, सरकमस्टेंस (Circumstance;परिस्थिति) का कारण या मर्यादा का कारण मजबूरी स त्याग बाहर स कर भी लेंग तो संकल्प स त्याग नहीं होगा।

❷ त्याग अर्थात् ज्ञान-स्वरूप स संकल्प स भी त्याग, मजबूरी स नहीं। ऐस त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रा का सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति का सागर में समाय हुए को ही कहेंग- 'तपस्वी'। ऐस त्याग तपस्या वाल ही सवाधारी कह जात हैं। ऐस सवाधारी हो ना? त्याग ही भाग्य है।

❸ बिना त्याग का भाग्य नहीं बन सकता। इसको कहा जाता है टीचर। तो नाम और काम दोनों टीचर का हैं। कवल नाम टीचर का नहीं।

टीचर अर्थात् पोजीशन नहीं, लेकिन सत्ताधारी। टीचर्स अर्थात् सभी को पोजिशन दिलाने वाली, न कि पोजीशन समझ उसमें अपने को नामधारी टीचर समझने वाली। जैसे कहा जाता है दत्ता, दत्ता नहीं लेकिन लत्ता है - ऐसे ही टीचर अपने पोजिशन का त्याग करती है तो यही भाग्य लत्ता है।

प्रश्न 5 :- संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज की क्या क्या निशानियाँ हैं?

उत्तर 5 :- बाबा ने बताया कि :-

❶ संगमयुग के ही अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज का चित्र भविष्य चित्र में दिखाते हैं। भविष्य के साथ पहले सर्व प्राप्ति का अनुभव संगमयुगी ब्राह्मणों का है। अन्तिम स्टेज पर ताज, तख्त, तिलकधारी, सर्व अधिकारी मूर्त बनते हो, मायाजीत, प्रकृतिजीत बनते हो। सदा साक्षीपन के तख्त नशीन, बाप-दादा के दिल तख्त-नशीन, विश्व-कल्याणकारी के जिम्मेवारी का ताजधारी, आत्म-स्वरूप की स्मृति के तिलकधारी, बाप द्वारा मिली हुई अलौकिक सम्पत्ति - ज्ञान, गुण और शक्तियाँ इस सम्पत्ति में सम्पन्न होते हो।

❷ सिंगल ताज (Single Crown) भी नहीं, डबल ताजधारी (DOUBLE Crown) होते हो। जैसे डबल तख्त - दिल तख्त और साक्षीपन की स्टेज का तख्त का तख्त है, वैसे जिम्मेवारी अर्थात् सत्ता का ताज और साथ-साथ सम्पूर्ण प्योरिटी (Purity) लाईट (Light) का क्राउन (Crown) भी होता है। तो

डबल ताज, डबल तख्त और सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप गोल्डन स्पून (Golden Spoon;सोने तुल्य) तो क्या लेकिन हीरे तुल्य बन जाते हो। हीरे के आगे तो सोना कुछ भी नहीं। 'जीवन ही हीरा बन जाता है'।

❸ ज्ञान के गहने, गुणों के गहनों से सजे-सजाए बनते हो। भविष्य का श्रृंगार इस संगमयुगी श्रृंगार के आगे कोई बड़ी बात नहीं लगती। वहाँ तो दासियां श्रृंगारेंगी, और यहाँ स्वयं ज्ञान-दाता बाप श्रृंगारता है। वहाँ सोने वा हीरे के झूले में झूलेंगे, यहाँ बाप-दादा की गोदी में झूलते हो, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हो। तो श्रेष्ठ चित्र कौन-सा हुआ? वर्तमान का या भविष्य का? सदैव अपने ऐसे श्रेष्ठ चित्र को सामने रखो। इसको कहा जाता है - 'ज्ञानी तू आत्मा' का चित्र।

FILL IN THE BLANKS:-

{ प्रैक्टिकल, तैयार, ताजधारी, स्वरूप, अविद्या, समाया, भविष्य, संगमयुग, त्रिकालदर्शी, प्राप्ति }

1 तो बाप-दादा सबके तीनों कालों को देख रहे हैं कि हरेक का ________ (Practical;व्यवहारिक) चित्र कहाँ तक ________ हुआ है?

प्रैक्टिकल / तैयार

2 ज्ञानी तू आत्मा, सदा भक्ति का फल-स्वरूप, ज्ञान सागर और ज्ञान में _____ हुआ रहता है, इच्छा मात्रम् _____, सर्व प्राप्ति स्वरूप होता है।

समाया / अविद्या

3 यह सब बातें, जो _____ में प्राप्त होनेवाली हैं, उसका अनुभव अब _____ में भी होना है,।

भविष्य / संगमयुग

4 _____ की स्टेज अभी है या भविष्य में? सम्मुख बाप और वर्से की _____ अभी है अथवा भविष्य में?

त्रिकालदर्शी / प्राप्ति

5 जैसेआपका भविष्य श्री कृष्ण का चित्र को जन्म सेही _____ दिखाते हैं, मुख में गोल्डन स्पून (Golden Spoon In Mouth) अर्थात् जन्मतेही सर्व प्राप्ति _____ दिखातेहैं।

ताजधारी / स्वरूप

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करो:-

1 :- हेल्थ (Health), वेल्थ (Wealth), हैपीनेस (Happiness) सबमें सम्पन्न स्वरूप हैं। प्रकृति भी सहयोगी है। 【✖】

हेल्थ (Health), वेल्थ (Wealth), हैपीनेस (Happiness) सबमें सम्पन्न स्वरूप हैं। प्रकृति भी दासी है।

2 :- आज बाप-दादा हर बच्चे के तीनों कालों को देख रहे हैं। पास्ट (Past;भूतकाल) में आदि काल के भक्त हैं या मध्यकाल के? 【✔】

3 :- पाप का खाता समाप्त कर बाप के खाते में भरो; कदम में पद्मों की कमाई कर पद्मापति बनो। 【✔】

4 :- समय को गिनती नहीं करो। बाप के गुणों व स्वयं के अवगुणों की गिनती करो। 【✖】

समय को गिनती नहीं करो। बाप के गुणों व स्वयं के गुणो की गिनती करो।

5 :- सम्मुख बाप और वर्से की प्राप्ति अभी है अथवा भविष्य में? श्रेष्ठ स्टेज अब है या भविष्य में? अभी श्रेष्ठ है ना। 【✔】